उमा की हिम्मत
शैतान बाप को सज़ा दिलवाई

जुही

आइए, आज हम आपको उमा से मिलवाते हैं। बहुत बहादुर लड़की है। उमा की उम्र है चौदह साल। उड़ीसा प्रदेश का नाम आपने सुना होगा। उड़ीसा के एक ज़िले के एक छोटे से गांव पलवल में रहती है।

उमा आदिवासी है। मज़दूरी करती है। उसकी मां भी पत्थर तोड़ने का काम करती है। बाप पास की मिल में मैकेनिक है। उमा की एक बड़ी बहन है शन्नो। शन्नो बचपन से ही अपाहिज है। उसके दोनों पैर खराब हैं। उमा शन्नो को बहुत प्यार करती है। उसकी देखभाल करती है। उसे खुश रखने की पूरी-पूरी कोशिश करती है।

इस परिवार की दिनचर्या बड़ी कठिन है। बाप-मां और उमा सुबह घर से निकल जाते हैं। दिन ढले घर वापस आते हैं। बाप की छुट्टी दोपहर को ही होती है। इसलिए वह घर जल्दी आ जाता है।

कुछ दिनों से उमा को लगा कि शन्नो कुछ डरी सहमी सी रहती है। पहले वह खूब हंसती-बोलती थी। अब अचानक गुमसुम सी हो गई है। उमा को यह अजीब लगा। मां को बताया। मां ने बात टाल दी। बोली, बेचारी दिन भर घर में रहती है। चल-फिर नहीं सकती। तो उदास हो जाती है। बात आई-गई हो गई।

हादसे की जानकारी

कुछ समय बीता। एक दिन दोपहर के समय उमा की तबीयत खराब हो गई। जब काम नहीं किया गया तो उमा ठेकेदार के पास गई। ठेकेदार अच्छा था। उसने उमा को छुट्टी दे दी। उमा घर आ गई।

घर का दरवाजा खुला देख उमा हैरान हुई। अंदर के कमरे की तरफ बढ़ी। चौखट पर पैर रखा ही था कि उसकी चीख निकल गई। देखा तो उसका बाप शन्नो का बलात्कार कर रहा था। शन्नो का मुंह और हाथ-पैर रस्सी से बंधे थे। शन्नो बेसुध पड़ी थी।

उमा को देखते ही बाप सहम गया। फिर कूदकर उसे भी पकड़ लिया। उसे डराया-धमकाया कि अगर उसने किसी से कुछ कहा तो उसकी मां और शन्नो को जान से मार डालेगा। आखिर उमा भी बच्ची थी, सहम गई। बाप यह कहकर बाहर चला गया।

उमा ने शन्नो के हाथ-पैर खोले। उसके मुंह पर छींटे मारे। होश आते ही शन्नो उमा से लिपट कर बिलख पड़ी। उसने बताया कि लगभग तीन महीने से उसका बाप उसके साथ बलात्कार कर रहा था। उसने शन्नो को भी धमकी दी थी कि

अगर उसने अपना मुंह खोला तो उमा और मां को जहर दे देगा। फिर शन्नो को बचाने वाला कोई भी नहीं रहेगा। कभी-कभी बाप का एक-आध दोस्त भी घर आता था। शन्नो के ऊपर बलात्कार करता। बाप को पैसे देता। इसलिए शन्नो घुट रही थी।

उमा की समझदारी

उमा से शन्नो की हालत देखी नहीं गई। पर साथ ही वह डर भी रही थी। फिर भी उसने सोचा, जो होगा देखा जाएगा। बाप को सजा मिलनी ही चाहिए। अगर हम चुपचाप सहेंगे तो हम भी गुनाह के भागीदार होंगे। पर सवाल था कि क्या करें। मां को कैसे बताएं।

दूसरे दिन सब काम पर चले गए। दोपहर होने से पहले ही उमा ने मां को घर चलने की ज़िद की। बोली तबीयत ठीक नहीं है। मां को किसी तरह राजी किया। खाने की छुट्टी के बाद दोनों घर आ गईं।

बाप को रंगे हाथों पकड़ लिया। मां को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। फिर भी दोनों ने बाप को मार-पीटकर घर से बाहर निकाल दिया। बाप के जाने के बाद मां फूट-फूट कर रोने लगी। उमा ने ढाढस बंधाया।

पुलिस की बेरुखी

फिर मां-बेटी शन्नो को लेकर थाने पहुंचीं। लेकिन रिपोर्ट दर्ज नहीं हुई। थानेदार ने उनकी बात पर विश्वास नहीं किया। भला एक बाप कहीं ऐसा कर सकता है। दिमाग खराब है। यह औरतें बदमाश हैं। खुद धंधा करती हैं। रुपए ऐंठना चाहती होंगी। डांट-डपट कर थाने से निकाल दिया।

आप से, समाज से—एक सवाल है, एक उम्मीद है। फैसला हमारे हाथ है। इनकी मदद करें या सच्चाई को नज़र-अंदाज करें। झूठी इज्ज़त ढकें या जुर्म खत्म करने को एकजुट हो जाएं।

लेकिन उमा ने हार नहीं मानी। गांव के मुखिया के पास गई। स्कूल मास्टर जी को बताया। आस-पास के लोगों से कहती फिरी। बाप की फैक्टरी पहुंची। उसके साथियों और अफसरानों से बात की। आखिर लोगों को बात माननी पड़ी।

समाज का विरोध

कुछ लोगों ने उसका विरोध किया। कुछ गांव-वाले नाराज़ हुए। जाति वाले उन पर उंगली उठाने लगे। आखिर एक मर्द की इज्ज़त का सवाल था। गांव की बदनामी थी। जाति-धर्म की बदनामी थी। अगर कुछ ऐसा हुआ भी तो यह तो घर की बात थी। इतना बखेड़ा खड़ा करने की क्या जरूरत थी। चुप रहती। इसी में सबकी भलाई है। इज्ज़त भी बनी रहती।

मुजरिम को सजा

इस विरोध के बावजूद उमा और उसकी मां डटी रहीं। बाप की फैक्टरी के बाहर बैठी रहीं। जब तक कि कुछ कार्यवाही नहीं हो गई। बाप की नौकरी छूट गई। उसके फंड के रुपए भी उमा और मां को मिले। उस रुपए से शन्नो के पैरों का इलाज कराया। बाप के खिलाफ मुकदमा चल रहा है। उसकी जमानत भी नहीं हुई। वह जेल में बंद है।

अपराजिता

आज मेरा हुआ है नया जन्म
अपराजिता है मेरा नया नाम
दौड़ रही हूं कबसे, किस-किस से
चाहती हूं बनना एक शक्ति खुद में
न हार मानूं कभी भी किसी से
माता पिता ने नाम दिया 'प्रगति'
आज हुई है एक नई गति सचारित
मुझमें
किया है रोना छोड़ लड़ने का संकल्प
हुई है एक नई चिंगारी उवलंत
भावना, संवेदना मेरी कमजोरी न बनेंगे
बनेंगे अब यह सब मेरी शक्ति
जीवन के नए मार्ग दर्शक
अब बनूंगी मैं अपराजिता

अपराजिता
कक्षा 12वीं

उमा, शन्नो और उनकी मां काफी परेशानियों से जूझ रही हैं। बाप की कमाई अब घर में नहीं है। गुज़ारा मुश्किल है। लोगों के ताने हैं। मुकदमे का खर्चा है। गरीबी और भूख है।

पर साथ ही हिम्मत है। बदला लेने और सजा दिलाने का निश्चय है। अपने ऊपर एक विश्वास है। आपसे, समाज से एक सवाल, एक उम्मीद है। अब फैसला हमारे हाथ है। उनकी मदद करें या सच्चाई को नज़र-अंदाज करें। झूठी इज्ज़त ढकें या जुर्म खत्म करने को एकजुट हो जाएं। □